The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 5 | December 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

मूल्यपरक शिक्षा का नैतिक विकास पर प्रभाव

अजय कुमार चन्द्रा

सहा0 आचार्य, शिक्षक शिक्षा संकाय, नंदकिशोर सिंह पीजीकॉलेज,

धनुहा, चाका, नैनी, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 12/11/2025

स्वीकृति तिथि: 22/12/2025

प्रकाशनतिथि: 31/12/2025

मुख्य शब्द: मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक विकास, मूल्य, चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व।

सारांश

वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति तथा भौतिकतावादी जीवनशैली के युग में मानवीय मूल्यों का ह्रास एक गंभीर सामाजिक समस्या बनकर उभर रहा है। शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को सुनिश्चित करना भी है। मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, न्याय, ईमानदारी एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे नैतिक मूल्यों का विकास करती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा, नैतिक विकास की प्रकृति, दोनों के अंतर्संबंध तथा समाज और विद्यालयी स्तर पर इसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मूल्यपरक शिक्षा नैतिक निर्णय क्षमता, चरित्र निर्माण तथा सामाजिक सद्भाव को सुदृढ़ करती है। शोध के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि यदि शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरक शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो नैतिक पतन की समस्या को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का आधार स्तंभ है, जो व्यक्ति को न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम बनाती है, बल्कि उसे सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से भी परिपक्व करती है। वर्तमान समय में शिक्षा का झुकाव अधिकतर अंकों, प्रतिस्पर्धा एवं रोजगार तक सीमित हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप नैतिक मूल्यों में गिरावट देखी जा रही है। भ्रष्टाचार, हिंसा, असहिष्णुता, स्वार्थ एवं सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ नैतिक संकट की ओर संकेत करती हैं। ऐसी स्थिति में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह व्यक्ति के नैतिक विकास को दिशा प्रदान करती है। मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को "अच्छा मनुष्य" बनाना है, न कि केवल "कुशल कर्मचारी"।

2. मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा

मूल्यपरक शिक्षा से तात्पर्य उस शैक्षिक प्रक्रिया से है, जिसके माध्यम से व्यक्ति में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास किया जाता है। यह शिक्षा जीवन जीने की कला सिखाती है। महात्मा गांधी के अनुसार, "शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के सर्वांगीण विकास में निहित है।" मूल्यपरक शिक्षा इसी सर्वांगीण विकास को संभव बनाती है।

3. मूल्यपरक शिक्षा के प्रमुख मूल्य

- सत्य और ईमानदारी
- अहिंसा और करुणा
- सहिष्णुता और सहानुभूति
- न्याय और समानता
- सामाजिक उत्तरदायित्व

4. नैतिक विकास की अवधारणा

नैतिक विकास से तात्पर्य व्यक्ति के उस क्रमिक विकास से है, जिसके माध्यम से वह सही-गलत, उचित-अनुचित तथा न्याय-अन्याय के बीच भेद करने की क्षमता प्राप्त करता है। यह

विकास केवल बाह्य नियमों के पालन तक सीमित नहीं होता, बल्कि व्यक्ति की आंतरिक चेतना, विवेक एवं मूल्यबोध से गहराई से जुड़ा होता है। नैतिक विकास की प्रक्रिया व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और व्यवहार में संतुलन स्थापित करती है, जिससे उसका आचरण सामाजिक मानकों के अनुरूप बनता है।

नैतिक विकास सामाजिक अनुभवों, पारिवारिक वातावरण, शिक्षा तथा सांस्कृतिक मूल्यों से निरंतर प्रभावित होता है। बाल्यावस्था में नैतिकता मुख्यतः पुरस्कार और दंड पर आधारित होती है, जबकि किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था में व्यक्ति सामाजिक नियमों, आदर्शों एवं आत्मचिंतन के माध्यम से नैतिक निर्णय लेने लगता है। इस संदर्भ में कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत महत्वपूर्ण है, जिसके अनुसार नैतिक विकास तीन स्तरों—पूर्व-परंपरागत, परंपरागत और उत्तर-परंपरागत—में संपन्न होता है।

नैतिक विकास का उद्देश्य व्यक्ति में ईमानदारी, न्याय, करुणा, सहिष्णुता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करना है। यह व्यक्ति को आत्मनियंत्रण, संवेदनशीलता और नैतिक साहस प्रदान करता है। इस प्रकार नैतिक विकास न केवल व्यक्तिगत चरित्र निर्माण का आधार है, बल्कि एक स्वस्थ, शांतिपूर्ण और मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

5. मूल्य और नैतिकता का संबंध

मूल्य और नैतिकता का संबंध अत्यंत घनिष्ठ एवं परस्पर पूरक है। मूल्य वे आदर्श सिद्धांत हैं, जो व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं, जबकि नैतिकता उन मूल्यों का व्यवहारिक रूप होती है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि मूल्य नैतिक आचरण की नींव होते हैं और नैतिकता उनका प्रत्यक्ष सामाजिक अभिव्यक्ति रूप है। बिना मूल्यों के नैतिकता दिशाहीन हो जाती है और बिना नैतिकता के मूल्य केवल सैद्धांतिक रह जाते हैं। मूल्य व्यक्ति के अंतर्मन में विकसित होते हैं और उसकी चेतना को प्रभावित करते हैं। जब सत्य, ईमानदारी, करुणा, न्याय और सहिष्णुता जैसे मूल्य व्यक्ति के जीवन का हिस्सा बनते हैं, तब वह नैतिक निर्णय लेने में सक्षम होता है। नैतिकता इन मूल्यों को व्यवहार में उतारने की प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति सामाजिक नियमों, मानवीय संबंधों और कर्तव्यों का पालन करता है।

मूल्य और नैतिकता का यह संबंध व्यक्ति के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मूल्य व्यक्ति को यह सिखाते हैं कि क्या अच्छा है, जबकि नैतिकता यह निर्धारित करती है कि उस अच्छाई को व्यवहार में कैसे लाया जाए। इस प्रकार मूल्य और नैतिकता का समन्वय एक संतुलित, उत्तरदायी और मानवीय व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है।

5. मूल्यपरक शिक्षा और नैतिक विकास का अंतर्संबंध

(क) मूल्यपरक शिक्षा का नैतिक चेतना के विकास में योगदानः

मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति में नैतिक चेतना का विकास करने का एक प्रभावी माध्यम है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को केवल ज्ञान तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें जीवन के नैतिक आदर्शों से परिचित कराती है। सत्य, ईमानदारी, करुणा, सहिष्णुता, न्याय और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से आत्मसात कराने से व्यक्ति में नैतिक सोच विकसित होती है। मूल्यपरक शिक्षा आत्मअनुशासन, विवेकशीलता तथा नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को सुदृढ़ करती है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर समाज हित में सोचने लगता है। इस प्रकार मूल्यपरक शिक्षा नैतिक चेतना को जाग्रत कर व्यक्ति के आंतरिक नैतिक विकास को दिशा प्रदान करती है।

(ख) नैतिक व्यवहार एवं चरित्र निर्माण में मूल्यपरक शिक्षा की भूमिका:

नैतिक विकास केवल विचारों तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह व्यवहार और चरित्र में परिलक्षित होता है। मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति के आचरण को सकारात्मक दिशा में परिवर्तित करती है। विद्यालयी गतिविधियाँ, शिक्षक का आदर्श व्यवहार तथा सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों का व्यवहारिक अनुभव कराती हैं। इससे उनमें आत्मनियंत्रण, सहानुभूति, सहयोग और उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। मूल्यपरक शिक्षा नैतिक आदर्शों को दैनिक जीवन से जोड़ती है, जिससे चरित्र निर्माण सुदृढ़ होता है। इस प्रकार मूल्यपरक शिक्षा और नैतिक विकास का अंतर्संबंध व्यक्ति को एक सजग, संवेदनशील और मूल्यनिष्ठ नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Crossponding author: ajchandra78@gmail.com

6. विद्यालय में मूल्यपरक शिक्षा की भूमिका

(क) नैतिक वातावरण का निर्माण:

विद्यालय विद्यार्थियों के नैतिक विकास का प्रमुख केंद्र होता है। विद्यालय का वातावरण यदि अनुशासन, सहयोग, सम्मान और सहिष्णुता पर आधारित हो, तो यह विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक होता है। स्वच्छ, सुरक्षित और सकारात्मक वातावरण मूल्यपरक शिक्षा को प्रभावी बनाता है।

(ख) पाठ्यक्रम एवं सहगामी क्रियाएँ:

विद्यालयी पाठ्यक्रम के माध्यम से नैतिक मूल्यों को विषयवस्तु में समाहित किया जा सकता है। इसके साथ ही वाद-विवाद, नाटक, समूह कार्य, सेवा गतिविधियाँ एवं खेलकूद जैसी सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों को व्यवहारिक रूप से मूल्यों को अपनाने का अवसर प्रदान करती हैं।

(ग) शिक्षक का आदर्श आचरण:

शिक्षक विद्यार्थियों के लिए नैतिक आदर्श होता है। शिक्षक का व्यवहार, भाषा, निष्पक्षता और सहानुभूति विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव डालती है। शिक्षक के आचरण के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा अधिक प्रभावी ढंग से संप्रेषित होती है।

(घ) अनुशासन एवं सामाजिक जिम्मेदारी:

विद्यालयी अनुशासन विद्यार्थियों में आत्मनियंत्रण और जिम्मेदारी की भावना विकसित करता है। सामाजिक सेवा, सामूहिक गतिविधियाँ और विद्यालयी नियम विद्यार्थियों को सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाते हैं। इस प्रकार विद्यालय मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम से नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

7. शिक्षक की भूमिका

- **नैतिक आदर्श के रूप में:** शिक्षक अपने आचरण, भाषा और व्यवहार से विद्यार्थियों के लिए नैतिक आदर्श प्रस्तुत करता है।

- **मूल्यपरक वातावरण का सृजन:** कक्षा में सम्मान, सहिष्णुता, सहयोग और समानता पर आधारित वातावरण बनाता है।
- **व्यवहार द्वारा शिक्षा:** केवल उपदेश नहीं, बल्कि स्वयं मूल्यों का पालन कर उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- **मार्गदर्शक और परामर्शदाता:** विद्यार्थियों को नैतिक दुविधाओं में सही निर्णय लेने हेतु मार्गदर्शन देता है।
- **संवेदनशीलता का विकास:** विद्यार्थियों में करुणा, सहानुभूति और सामाजिक चेतना विकसित करता है।
- **अनुशासन और आत्मनियंत्रण:** सकारात्मक अनुशासन के माध्यम से आत्मनियंत्रण की भावना विकसित करता है।
- **सहगामी क्रियाओं का उपयोग:** नाटक, चर्चा, समूह कार्य और सेवा गतिविधियों द्वारा मूल्यों को व्यवहार में उतारता है।
- **समानता और न्याय की भावना:** सभी विद्यार्थियों के साथ निष्पक्ष और समान व्यवहार करता है।
- **नैतिक संवाद को प्रोत्साहन:** कक्षा में नैतिक मुद्दों पर संवाद और चिंतन को बढ़ावा देता है।
- **चरित्र निर्माण में सहयोग:** निरंतर प्रेरणा और सकारात्मक प्रतिपुष्टि के माध्यम से विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में सहायक होता है।

8. परिवार और समाज की भूमिका

मूल्यपरक शिक्षा के विकास में परिवार और समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

परिवार बच्चे का प्रथम विद्यालय होता है, जहाँ वह नैतिक मूल्यों का प्रारंभिक अनुभव प्राप्त करता है। माता-पिता का व्यवहार, पारिवारिक वातावरण, आपसी संबंध और अनुशासन बच्चे में सत्यनिष्ठा, सम्मान, सहयोग और सहानुभूति जैसे मूल्यों का विकास करते हैं।

समाज, परिवार द्वारा प्रदत्त मूल्यों को व्यवहारिक रूप प्रदान करता है। सामाजिक परंपराएँ, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सामाजिक संस्थाएँ और सामूहिक जीवन के अनुभव व्यक्ति को नैतिक आचरण के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार परिवार और समाज मिलकर मूल्यपरक शिक्षा को

प्रभावी बनाते हैं तथा नैतिक, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक के निर्माण में सहयोग करते हैं।

9. पाठ्यक्रम में मूल्यपरक शिक्षा

पाठ्यक्रम में मूल्यपरक शिक्षा का समावेशन नैतिक विकास की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। पाठ्यक्रम केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित न होकर जीवन मूल्यों को भी प्रतिबिंबित करे—यही मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य है।

साहित्य, इतिहास, नागरिक शास्त्र और पर्यावरण अध्ययन जैसे विषयों के माध्यम से सत्य, न्याय, करुणा, देशभक्ति और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

अतिरिक्त उपायों में जीवन कौशल शिक्षा, योग, ध्यान, सामुदायिक सेवा और परियोजना कार्य को पाठ्यक्रम का भाग बनाकर विद्यार्थियों को व्यवहारिक अनुभव प्रदान किया जा सकता है। मूल्यपरक शिक्षा को पाठ्यक्रम में अंतःविषयक रूप में समाहित करने से विद्यार्थी नैतिक सिद्धांतों को दैनिक जीवन से जोड़ पाते हैं। इस प्रकार मूल्यपरक पाठ्यक्रम न केवल बौद्धिक विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और नैतिक चेतना को भी सुदृढ़ करता है।

10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और मूल्यपरक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्यपरक शिक्षा को भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल आधार माना गया है। यह नीति शिक्षा के उद्देश्य को केवल ज्ञान और कौशल तक सीमित न रखकर व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक और मानवीय विकास से जोड़ती है।

नीति में स्पष्ट रूप से सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, सम्मान, न्याय और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को शिक्षा प्रक्रिया में समाहित करने पर बल दिया गया है। इसके अनुसार शिक्षा का लक्ष्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो नैतिक रूप से सुदृढ़, संवेदनशील और जिम्मेदार हों।

इसके अंतर्गत पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा, योग, ध्यान, जीवन कौशल और सामुदायिक सेवा को शामिल करने की अनुशंसा की गई है। शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा का प्रमुख संवाहक माना गया है तथा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक एवं मूल्य शिक्षा को अनिवार्य करने पर जोर दिया गया है।

11. मूल्यपरक शिक्षा के नैतिक विकास पर प्रभाव

(क) नैतिक चेतना का विकास: सही-गलत की पहचान, नैतिक विवेक और कार्यों के नैतिक परिणामों को समझने की क्षमता विकसित होती है।

(ख) सकारात्मक व्यवहार में वृद्धि: ईमानदारी, सहिष्णुता, करुणा और सहयोग जैसे गुण व्यवहार में उतरते हैं।

(ग) आत्मनियंत्रण एवं अनुशासन: आत्मसंयम की भावना विकसित होती है जो नैतिक आचरण को स्थायी बनाती है।

(घ) नैतिक निर्णय क्षमता का विकास: परिस्थितियों का मूल्यांकन कर विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता मिलती है।

(ङ) सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना: व्यक्ति अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी समझने लगता है।

(च) चरित्र निर्माण एवं नेतृत्व क्षमता: मजबूत चरित्र और नैतिक नेतृत्व के विकास में सहायक होती है, जिससे व्यक्ति समाज में परिवर्तन का संवाहक बनता है।

12. मूल्यपरक शिक्षा की चुनौतियाँ

- **भौतिकतावादी दृष्टिकोण:** आधुनिक समाज में भौतिक सफलता को प्राथमिकता दिए जाने से नैतिक मूल्यों की उपेक्षा होती है।
- **पाठ्यक्रम का अत्यधिक बोझ:** विषयवस्तु और परीक्षा-केंद्रित पाठ्यक्रम के कारण मूल्यपरक शिक्षा को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता।
- **प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी:** नैतिक संवेदनशीलता और प्रशिक्षण का अभाव।

Crossponding author: ajchandra78@gmail.com

- **व्यवहारिक मूल्यांकन का अभाव:** नैतिक मूल्यों के आकलन हेतु प्रभावी प्रणाली का न होना।
- **परिवार और विद्यालय में समन्वय की कमी।**
- **नकारात्मक मीडिया प्रभाव:** विशेषतः सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव।
- **उपदेशात्मक दृष्टिकोण:** केवल सैद्धांतिक शिक्षण प्रभावी नहीं होता।

13. समाधान एवं सुझाव

- **पाठ्यक्रम में समावेशन:** सभी विषयों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को अंतःविषयक रूप से जोड़ा जाए।
- **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों में नैतिक दृष्टिकोण और संवेदनशीलता विकसित करने पर बल।
- **गतिविधि-आधारित शिक्षण:** नाटक, चर्चा, सेवाकार्य, भूमिकानिर्वहन आदि के माध्यम से व्यवहारिकता।
- **परिवार–विद्यालय–समाज समन्वय:** एक समान नैतिक वातावरण का निर्माण।
- **सकारात्मक मूल्यांकन प्रणाली:** गुणात्मक, सतत एवं व्यवहार-आधारित मूल्यांकन अपनाना।

14. शोध निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मूल्यपरक शिक्षा नैतिक विकास की एक सशक्त आधारशिला है। जिन शिक्षण संस्थानों में इसे योजनाबद्ध व व्यवहारिक रूप में लागू किया गया, वहाँ विद्यार्थियों में नैतिक आचरण, अनुशासन और सामाजिक संवेदनशीलता में सुधार पाया गया। यह शिक्षा सही-गलत के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण, आत्मनियंत्रण, सहिष्णुता, करुणा और उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करती है।

केवल सैद्धांतिक शिक्षा अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकती — इसके लिए गतिविधि-आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

15. निष्कर्ष

मूल्यपरक शिक्षा नैतिक विकास का एक अनिवार्य एवं प्रभावी साधन है। वर्तमान भौतिकवादी और प्रतिस्पर्धात्मक परिवेश में जहाँ नैतिक ह्रास एक गंभीर चुनौती है, वहाँ मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में निर्णायक भूमिका निभाती है।

यह शिक्षा केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि संवेदनशील, विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक गढ़ने में सक्षम है। यदि शिक्षा व्यवस्था में इसे योजनाबद्ध, सतत और व्यवहारिक रूप से लागू किया जाए, तो समाज में नैतिक संतुलन और सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

संदर्भ सूची

1. गांधी, एम. के. (2008)। ***शिक्षा पर विचार***। अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
2. शर्मा, आर. के. (2016)। ***मूल्यपरक शिक्षा एवं नैतिक विकास***। नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
3. सिंह, ए. (2019)। ***शिक्षा, मूल्य और समाज***। वाराणसी: चौखम्भा प्रकाशन।
4. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020***। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
5. कोहलबर्ग, एल. (1984)। ***नैतिक विकास पर निबंध*** (अनुवाद)। नई दिल्ली: हार्पर एंड रो।
6. अग्रवाल, जे. सी. (2015)। ***शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार***। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
7. पांडेय, आर. एस. (2017)। ***नैतिक शिक्षा: सिद्धांत एवं व्यवहार***। प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
8. यादव, एस. के. (2018)। ***आधुनिक शिक्षा और मूल्य संकट***। जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
9. मिश्रा, पी. (2014)। ***भारतीय शिक्षा परंपरा और मूल्य***। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

Crossponding author: ajchandra78@gmail.com

10. एन.सी.ई.आर.टी. (2021)। ***विद्यालयी शिक्षा में मूल्यपरक शिक्षा***। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
11. कुमार, वी. (2020)। ***शिक्षा में नैतिकता और मानवीय मूल्य***। लखनऊ: न्यू रॉयल बुक कंपनी।

Crossponding author: ajchandra78@gmail.com